

न२

वश्यकात्रिणी ॥ इह धीर्यददहनी ॥ भेलाव ननी जया ॥ उभाद
टंकनी ॥ कृत्वा कृत्वा विधानिनी ॥ विनूया कालनागि ॥ महा नागि
मनामनी ॥ महा विद्या गुरु निजा ॥ वलुदा दलु मनुना ॥ निम
नूतिनी ननु ॥ तजिनी नाय धात्रिणी ॥ रुनादनी वं मूदा ॥ का
लिङ्ग धात्रिणी ॥ पटादनी रुन्वीव ॥ सुमील काल सुन्दरी ॥ मा
नी उमत्र का ॥ र्त्न मलु लमा लिनी ॥ नका नजा यिङ्ग ला ॥



वल्लु की गुरु कनी न विदु र्कणी महामानी सु दी उ गु नी न
 नय स्वायि नी महानि जा व न नी या व न पु दा न व लु व
 ल द हा ल भ्रा द यो मि म दि नी न महा द का ला द ग म्ब
 जाल जल न्य नी न मा या कु ण पु ल ना मा महा वि ल व ना
 न यो न न्द नी वि षु मा या कि न्दि ४ य्कि स नू द नी न या ग
 ग दा गी व या गि नी या गि व ल ल न सह स नी र्ष या दा च स
 स मु न य ना द ला या न क गु या व का ला य ला मृ न य ना व ना



गु ता पु ना न्द व न मा वा ग्नी वाम नी पु यो कामि म्खी ला क ला व
 य ग मि नी न वा द सी दान वी रू नी वि न्ना वी थ त्थ ना क ना
 ला या न दा ला व स नि ना नि ४ स ना या जा नि दू ला य्कु ला
 सान्ना इ ख लु वू यि स र्ग वि स र्ग ध म नी क मि नी व न्ध नी
 ना स ल्हा वि नी ला र्ग र्ग व नि म्ना दू का पु का नि नी पु व्ता व
 द्री का यूनू इ स सा वि ल मि ना आव नि नी य् र्ग ना य
 ना स न स नी मि ग्ना य न्नु क्क ४ पु षा वा न ना व य म मि

श्री ५ / १० १५ २० २५ ३० ३५ ४० ४५ ५० ५५ ६० ६५ ७० ७५ ८० ८५ ९० ९५ १००

गमश्चनीगारिनीवेद हस्तिगिजायपसिनीविभ्र
 लम्बुमाय विगुगुसिनीसमीनज्वकागलनीनन
 गविगनायिव।डाविनीवयलाहम्बा।गामिलीमयुम
 नयम्मानसवहावधु।हीवीनीकविलानध।नरुगुन
 विमीन।ववगीसुमुखीनटी।नजन्मायायिनाविभ्र
 गारुडाकयदिनी।नेन्दावहावगीमेवी।विभ्रलायिव

मानुवीनविविगुलाहिनीकल्यासुकल्यायूननायिव।विनी
 धानिनीहलाधीनावगवगीउटा।अग्निद्वालायसुनटी।दिवधु
 नीगध।गयिनीगायिनीधूमा।मनीविद्वालिनीत्रिषगयसिनी
 वहासंभाहाकाठनाइवला।विकल्यालम्बिकामूला।गन्दावह
 टिका।अविगुहावकेवलया।उनीयादायूनलवारविगुनिभ्र
 च।थामनि।गुलकिगानिर्वानीहसिकावृष्टि।निवृष्टि
 दया।विद्यावगीमिश्र।वासनाथामदिनी।निर्वाजनावयु

सकारवायानमार्थिकी मयनि विम्वनि जाला सा । रदसु दूय धा निनी
 मकावयेन न्या । कुनो विज्ञान मय्यो विम्वनि कि विज्ञा वासि
 दिनी मुदिगानना । अनया यवहावा । सर्वज्ञान य
 नूनी मोर्झ नीलावा यमिमा वृहती खला । यमिमा यमिनि
 ४ कृहिकागर्वे नयिया । स्तुति का सर्वना लडा । मयणी पुतव
 सि का । सा विगी वद जननी । निगमा वाजया विनी । विक

म४

कि मनी ४ म्मा पुविस्त्रा जयें वत्यणिना । लव नूवद् वा ससु ज्ञान
 य । काये लाया । मय ग था । दक्षिण वव नि दोय । सम्म क्काय ल
 वदे । म्मा म्मा । यिवदूया । वदं म्मा पुमिदं यना । ०० दा
 धयि व्वा मि गद गिद नवानि न । ०० दं म्मा यस्त्रे न । गुल्ल
 । वदं नय । धुला । नला । यिद हिल्ले यान व कृ यय स सदा
 ०० म्मा म्मा गुक्का का । तीसह सु नाम म्मा वस्य म्मा विद

वे ५

[illegible][illegible]

नो इति वा जानन्धी महीदहा सुभू न वा पमदि यतिन
 वात का लासा असनाय न भव्य नी न गितिया नाम हु नी नाग
 नी नील दहा काली कदम्बी द्रिया मान नी यामहादवी महा
 लवाले नी न महासा सा ५ न नी न नी विदु य विग न गभवना १ य
 सा मृ जास ददवी दवी कन विह विग न न व सु मु सु पु मे ये नी शव

नी

नीश्वर वंति नागमाल ममला नीला गरिय नी गा पना गिनी म
 माया महाद द्या महान ग विना त्रिना लम्बा द नी लाल गटा इल द्या
 ल की पुदा यिनी धा ग्री धालो धना का ना धननी धवन यिया
 माया ह ना ना धा ह निव कुह नी ग्य नी वि ध्य ग नी व दाने न
 ना ना हाय ल पु दा धान की य ध ना ना वा धा ना धो य पु त्त नि
 ला क का नि ली ली मा काला मालि ना वाम गा ह वि ३ मि नि

उनाय कलासावायला जिगा। वडाहला। ननभकि विमयाव
पनाह झाउमदिनीयुधं हिनीतकहु जासमी। विदु।
दहु। झायाधनसगाऽ दहुन महाकासा। निमूर्ति मूम
याकटकुहा। यदिका विम्वनू पाव जावदागि। जभन्यनी
नीमवनीमाना। नममार्ग युकाभिका। केयसा भूयनी
कगा काभाद नीकिगि। मयुषयादल। ननदकीकी सि

पालिनी। माननीया मनांग। मना नन्दयुदायिनी। सि दान्त
खनिन धावा। मणिनीमधुलधिया। बालाययवामी वृद्धा
मीमायलपुषा। ननत्तमासाधनाकाकाद। वीकनविती। जि
धमो मूर्ति धाकनू रिधे विगुषावनपिया। संकल्यनी
कनी कलागी माकलस्वना। वसुन्धनायाधदायी वधि

वानसोननरविद्याविशालिकावन्नावन्धमीवन्धना
मयाजटाद्वन्द्याजननीजाद्वीजगानाविनीम
वयजयनीयागनूदनीयगायमुयहनागायीतयस्यागा
यियाआनिरूपाछागवतीलगेनीलगमालिनीला
तस्यालवगमाहनिदातववत्तलास्वाहात्रयास्वधाह

ना

वावषकावस्त्रयिनीहकाकृतिर्नभात्रुपायददिय
वास्त्रुमूर्यायमसाकानामुकम्पवाकृतिधनिनीउमीधी
नदहनमस्वस्त्रियुकाजिनीसगम्भशसामत्रुवायम
वाहत्रयिनीसर्वगस्वामयीर्वायीवर्ग्यवनिषद्व
दीमूर्याजयायिकामनिर्विहायसीधुनिधानाकायाह
वाहुनानाउविकुमीस्त्रिगीश्याजिनीजकिनीधना

रव ३

...यांनुमोनसीव... आवनाशुविदायु...
 ...नाजहीगुलव... आदिसर्गादि...
 ...मीनथा... मूलाना... कृतिनी... स्वादि...
 ...पुनकवासाय... विमुद्रा... नाह...
 ...सु... व... म... वि...
 ...वा... नी... म...
 ...वा... नी... म...

य

...न... नि... नी...
 ...मूला... नी... नी...
 ...लताम... नी... नी...
 ...नी... नी... नी...
 ...नी... नी... नी...
 ...नी... नी... नी...
 ...नी... नी... नी...

ॐ हस्तावभिर्लोच यानिनी नाकि धादिनी। खडादिनी
धना कुमुदीधन ननिगा खकु यं टा निगा वात शुभलोच
धादिनी नवकं कात नकुल सर्थ हस्ता समुद्रना। मन्त्र
निनी वशि कुनु नीदमन् प्रिया। हि दि वाता मिनी प्र
साध्या यनिदिनी गध। यदि मयानिनी नया। नगधी म
हिना यिन निवाया गध र्देवा। कुन हस्ता विगुलिनी। न

३

त्रक रुधनादा ना कुनिका कुनदा र्गगा। कमलुलूकना इका
गृध्राद्या पृथमा लिनी। मांसखलुकला वीर। पुनवत्य कना कना
गदा वर शुभ श्रद्धा। मुक्ति नान रुधादिनी। युद्धगा व यनिग
व। शुक्ला म्बु विवर्द्धनी। प्रसन्ना ननिग मुखी विनिष्ठा
कपालिनी। कामभूया कामगवी। कमनीया कलावगी। म
लिन्दगनया। सिद्धा ग्मदावनी मही। नवा मन्त्र स्त्री व



कृष्णद्वय दूती नवानाहसा गथा ३ वनी का श्री मन्त्र यवादि
 सर्वद्वी स्रुयाव नाना नूतन धना मला नह श्री लोके न
 ला श्री नचयून्ने कृष्णमयी नह गीत विद्या धाना यदाव
 मनेन्य नो न वगला ना नमान श्री चलो महीषमर्दिनी नमि
 य क्रिष्ण वा सुली ला न्नु नु वन न्य नी न ना न ना न न्य नी
 नित्य क्रिन्ना व जयहे नवी वलुया (म न्य नी ना न न न न)

ॐ



नृडा ल्य नृच गी ॥ ३ ॥ नृच म महा नृ द्या य नृच न न
 न न्ना धन न श्री विष्णु ल द्यो वल का निव्य क ल्म बा ल्व नि
 गा व म हा च नु ले न वी य न म न्य नी ले ला व वि ज या नाल
 म्खो दि क्क व वा सि नी महाम न्क न्य नी व द्वा ल्म निव्य नृ
 ना न गी न च नु को या ल न्य नी व स्र नृ कृ ण न्य नी ग था ३
 व नु न्म न्म नो य च नु वा को न्म न्म न्य नी न च ल्म न्म न्म



कावलि कावलि नाटिका वाचा दिनी मधुमता । रा
 नली मुमुक्षु श्वरी नवाणी श्वरी वयुर्वे ला सो भाग्य क
 लथेन वीरिदिना म्भवावधनदा कोल नाति श्वकुट्टिका
 किनामी निवदूगीव कात संकर्षणी गथा ककुदी ह
 कटादवी वयल गुमनामिकान महा नूव श्वरी निह्याश
 यजंके श्वरी गथा ॥ शवरी विमै लावधि यदा संसान

६०



रात्रिनी मविशाम हाभाहि नीव वाला गेयुव मुन्दनी उद्युगा
 नावेक जठामथानी लसन स्वगी गिकलु की छिन्न मस्तवा
 धिसत्वा न वश्वरी व वृक्षानी वेषु वी माह श्वरी की मायुत
 वानवाना ही नान सिंह व वाम् ६० नुदा यो निजा नवलु
 वीवलु दांठा नमै माला वल श्वरी मवाली नीलयगा कावलि
 नसिद्धा कुन श्वरी ६० नुदा की वज्र वा नाही रुक्का नीव लला
 नी हय ग्रीवा ह सि रुकु ना कुली मृत्यु हात्रिनी हं मश्वरी

भाशदाव भगत कली जव न्य नी नखन कली अ क कली
कली वला वला न महा नी ल न्य नी जाग व द सी का क दु लि
गुह्य नी व ज व ली महा विद्या व वा लु वी भ क म नी दा
व नी ज म नी च वि का ग धा न च क वी वा ज य नी च लु कान न
य ना कि नी नी ल सा हि न नू या व व द्वा दी न य नि ना वि
काल व दि नी नी ल का न मी न क द कि का न ल न ठे न व ना

ॐ

ल म्बा कामाख्या कल कटु नी न काम क नी वि श्व नू या मा य
प्रा व नि नी न धा कामा क काम य ली ली मा दे वा द्व म
रु का धू मा व नी या ग नि डा व द्वा वि षू नि कृ न नी र क्त गु
का पा लि नी व वा धि का ल न के न्य नी व म हाम ग ल व ली व
जाम वा य द्वा श व नी र वि भ ल म कि सी य ली रु व व ली
दा द्वा का पा लि का य धू नी का महा काम क्वा वि व ली

विभीषणबुद्धि। मानसाकासुदामिनी। निर्मलहिनी। नदी
नी। सुधा। ज्ञानमदात्मिका। कामदेवीमहा इषाया। महामा
नृषीगथा। ठूठी। मनीषा। कीर्ति। महोदयी। कवचिनी।
काश्यामकनीव। लानीया। गुणगीगथा। जयकालीधूमकाल
काहा। कालगुणकालिका। धनकालीधाननाय। कालीकणन
कालिका। वेगल। कालीकंकाल। कालीगीनमकालिका। नी

उ

उ। कालीधाननाय। ननकालीगणववनगगा। इन्द्र। यकालीव
हमधनकालिका। ज्ञानकालीवसंहान। कालीसंयमका
लिका। इन्द्र। ननकालीगदनुनिम्भकालीगम। यन। ननकामहाना
गीकाली। महानृषि। नकालिका। शवकाली। श्रीमकालीव
कालीगणववनसंशसकालीवगन। श्रीरुयर्कनकालिका
विक्रान्तकालीधाननाय। कालीविकटकालिका। कनार

लोगदन्त काग काली गन ४ यन ४ विश्व मि काली श्री काल
 सिद्धि कालिका । विद्या काली वंज काली महा काली
 वक्र गङ्गा गत १ काम काली काली काली गये वन ४ भगवान्
 लिखान्मरु कालिकाँ कल काली नाद काली सिद्धि काली
 गत ४ यन ४ उदाम काली सनाय काली चञ्चल कालिका
 मनी काली कालाव काली कुनैय कालिका । कपाल काली
 मृग कालिका ५

उ

वशी गमन काली गये वन ४ उदाम काली पुष्प काली विज
 य कालिका । कुठ काली याग काली गय ४ काल गये वन । ज्ञान
 च काली गत ४ प्रण काली गत ४ यन ४ सूर्य काली वन्द काली
 कोमदी कालिका गत ४ सुलिङ्ग कालिका काली वीन काली
 गये वन । वन काली कुँ कुँ कोन नाद काली गत ४ यन ४ य
 काली विष्णु काली । महामा १७ कालिका यि ना काल

हीन

स्य काली कलद श्री न कालिका विष्णु काली गद न गगना माहि
ग कालिका श्वेत काली नाग काली गगना क स कालिका म
गगन काली व श्वेत काली रुद्र द न माया काली माह काली ग
भाग्य म काली का युन ४ कल वल काली व गगन व काली व
कान सृष्टि काली क्लिप्त काली युन ४ संहार कालिका अना रथा
कालिका रथि गगना काली गगना य न वा म कौ काली यी व क

ॐ

ली ग कि काली ग धे व व उरु काली अर्ध ४ काली ग धा वा रुद्र क
लिका ग धा स मय काली व की लिक कुम कालिका मदन विहारी
काली व वित्तरा कालिका विव अर्ध ग काली व रमान नु क
ली ग धे व व वासना कालिका याग सृष्टि काली गग ४ य न ४ ३
या धि काली व म हा दय काली गग य न निवृत्ति काली व ग
न्य काली व वा ग्य कालिका समा धि काली व कृति काली

लय कालिका । सहा काली वयन मार्थ काली निह कालिका ॥ ५ ॥
 वात्म काली वयन मार्थ काली वध कालिका । शालास कालिका भू
 कालिका डनय कालिका । लय काली सिक काली गगध सुगिक
 लिका । यगि विम कालिका वायि । नुक कालि गग ४ यन ५ के वः
 लय काली सायुष काली वधु कालिका । गगध पुन वा वृ
 काली वामृग कालिका । भा क काली वदि शन मय काली

ॐ

गग ४ यन ५ नु काली वान न्द मय काली गधे वयन सर्व
 मय विष्णुया । निर्वान मय कालिका ॥ ॥ ॐ गिना मां सह
 गे था क भवा इयि कं प्रिय ५ य ० ग ४ मृग मंदि सर्व के न गल सि
 न । निगन सद नं मृगु र्दग वायि ठ विष्णु गि । य ५ १० लय लद म
 रु सय पृष्ठ रुतं मृनु । याया नि वि लय या नि । मन्द ना डि मि
 नायि । डय द वा वि न स्य नि । था ग म नि नृय यो न ग ४ ॥ श

ॐ वि ३

अविनीयक यदपीदं ॥ सुगान्निनवदा विदुर्ना ॥ इति
वगि ॥ सको नैव युवा धनुना न गच्छन्ति विदुव ॥ ४ ॥
यन्के धुका टय ॥ ३ ॥ य सग्म ॥ य लुयन् ॥ वाधन् न विव ॥
यि ॥ ना ॥ का ल मृ ॥ य ल व गि ॥ न ज्ञा य न व मू क दा ॥ ४ ॥
न न दो र्द ॥ वे र्द ॥ न ज्ञा य ग ॥ अ र्था दो ना ॥ ५ ॥
॥ ४ ॥ ॥ य ॥ च क र्ण ॥ वि य ल र व ॥ ४ ॥ यान् यान् न नो ज ध नि र्क ॥ ४ ॥

६

३१

स्नान साधयति ॥ सु सु नाम यू जान ॥ य य ॥ ४ ॥
वि ग ॥ या य ॥ स स र्व सि ॥ द्वी ना ॥ ४ ॥
न व ल वा न् वा ग्मी ॥ नू य वा न् नू ग व ॥ ४ ॥
नू ना ॥ स र्व दा ज य वा न् ॥ ४ ॥
ना ॥ ४ ॥ स नि र ॥ नि यू ना म न् नि ॥ ४ ॥
व न् ॥ ४ ॥ अ क ॥ ४ ॥ स हि ॥ अ ग्ग ॥ ४ ॥

३१

नूयमिदं इयं स्मृतं तु सा क इ लं ॥ १ ॥ अगस्त्यवहव इति स्मृतं
गमसिद्धिदायिनः गान् विद्याय सुप्रभा निगमः सिद्धिः यन्
कथं न नाना वाचो यथा दत्त्वा नाम वै कं कम नाना गव्यं कं
विनिर्दिष्टं ॥ १ ॥ गणधर्माद मनू न्या सुगु ॥ ३ ॥ यत्र गणरा स्वनस्य
न्दा बोध्या नय वीरि ॥ १ ॥ मातृ गी कुसुमे विस्त्रय गे वा या य स न व
॥ १ ॥ मधू की गडा कया वा ॥ १ ॥ कर्म वा कृत न वा ॥ १ ॥ यथे कं श कया

६

३३

व १
नाम पूर्वयो क कुभने हि ॥ १ ॥ नुवं गि वानं निष्ठाद्य गन ॥ १ ॥ सुगु य
वी कथं न नाना वाचो यथा दत्त्वा नाम वै कं कम नाना गव्यं कं
विनिर्दिष्टं ॥ १ ॥ गणधर्माद मनू न्या सुगु ॥ ३ ॥ यत्र गणरा स्वनस्य
न्दा बोध्या नय वीरि ॥ १ ॥ मातृ गी कुसुमे विस्त्रय गे वा या य स न व
॥ १ ॥ मधू की गडा कया वा ॥ १ ॥ कर्म वा कृत न वा ॥ १ ॥ यथे कं श कया

नथा जयन् महाद्वि कयी जाम् महामावीर्यम् यम् यम् यम्
 नं स्तुतिमिदं यत् नाना यमिदं गत्वा यत् नाना यमिदं गत्वा
 लिखित कर्म लिखित यत् नाना यमिदं गत्वा यत् नाना यमिदं गत्वा
 निगुणवद्वा नाभा वने यत् नाना यमिदं गत्वा यत् नाना यमिदं गत्वा
 नवानमूदीनयन् ॥ ३४ ॥ यत् नाना यमिदं गत्वा यत् नाना यमिदं गत्वा
 यत् नाना यमिदं गत्वा यत् नाना यमिदं गत्वा यत् नाना यमिदं गत्वा

५

२३

यत्
 विष्णुः कृष्णः कृष्णः कृष्णः कृष्णः कृष्णः कृष्णः कृष्णः कृष्णः कृष्णः
 दत्तः दत्तः दत्तः दत्तः दत्तः दत्तः दत्तः दत्तः दत्तः दत्तः
 जयी जयी जयी जयी जयी जयी जयी जयी जयी जयी जयी
 लयः लयः लयः लयः लयः लयः लयः लयः लयः लयः
 ददीः ददीः ददीः ददीः ददीः ददीः ददीः ददीः ददीः ददीः
 स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः

यो साधक शगचपूषा कगे निर्हा एतकं यनि वूजयन
 लिं वप्रत्यहं दद्यात् चतुर्विंशति वासनानां भागानाम्
 सायं सिद्धांतमावगाथादयस्कृत् नभादनेव व नीवे कन
 लयवच उच्चाठने मान लाव गधदया इति वात्रया श
 ठिकाधनुवादादि यत्तिलीयाइकादिष्वकृपागुदुर्जन
 वगाला नोदहादिपुर्वमने ययुश्चादि दमोभनिगम
 ३

ला सि २
 नाली च कनां व जाला जाल क मालिनी मली मावकाहनान
 वीनाव जायधगध पध नीवसालकी विष्यमदि नविदि
 शमृत् ४ मरुमुवाइय धा नूकु वलाहकी नविनी विमूढा
 कायव नुसर्वनामखी न विदा विली विष्य नूया विक
 मलाविनी न विडा विनी मा कदागी कालवकु स्वनी ली
 हागकवाला च कृनाकाश किर्ति जिनी न सर्वन आम

दिनि ॥ १॥ ककनीकृतिः ॥ महाकुटुम्बमनहक कयाह
 कृगावकातामिकाताकातान् केनीवकनृत्तानिधिः ॥
 नाद्यावगता संहानकविनीगथा ॥ अनादिभ्यमहान्महा
 धाशुसिगकनौवलीषाकानाचवकुड्डी वदुयायेकयादि
 वदुतामनाकुनाध्याकृतमार्गवगभ्यनी ॥ दिगम्बतामृक
 लीवदुमृष्टिर्निविध्यनी ॥ समाहनीकोरकनी संतिर्न

सि

ता २

महानागोमायुनि कर्केटि ॥ नागिकविश्विकनी गंगा
 यमून ॥ गमावति नर्मद सदानिवसहधर्मवाकमिति
 महानितयगात्रिनि कोलावानवतिनि कलार्चनैकद्विनि
 कलधर्मवर्तिके ॥ अवीश नानावीश जगदीश जीवा
 लूव अमूर्त विमूर्त नानामूर्त मूर्त ॥ गीग सकलमु
 र्तिधय वृक्षा ॥ लुग्यनि वृक्षा लुकसेवक काठिवृक्षा
 सलिकात्रिनि सर्वग्यनि सर्वेग्यत्रेकगाम् सर्वसर्व

पुदायिनि सर्वसर्वेभ्यनि यसीदयसाद यमीदुं सुं सुं सुं
 रुद्रं रुद्रं रुद्रं रुद्रं नमः स्वाहा ॥ ॥ ह्रीं गिग कयिगं न
 यगि पुनयुमेश्वरगेगं पूर्वसुवस्य रूगवा मिदं पात सम विथ
 ॥ गत्या भननं नया शुभगेय हिनया वृगि गदेव सलगत स्या रुः
 लं सटि गिना च थ ॥ गद्या भूत्की रुनाद वि सर्वयाथे ॥ यम
 द्युगं ॥ सर्वो भ्य कामानाया गि सर्वसिद्धी भ्यविन्द गि ॥ म मना
 निव सर्वानि सलग याधमावृगं ॥ उगा दसय गि किपु
 य

भाहत्या विपार्थिवान् ॥ यान् यात्कामान हि ध्यायय गत्युह यमीः
 भ्यनी ॥ कनामल कवर्कं नं कुरुगना प्रसंगय ॥ वनाच नमिः
 दं विभ्यं यत्किं श्रिगय निदृभ्यं ॥ नाकथा कवया ॥ रखा गाः सः
 मस्तदिवयान ग ॥ यागसमर्चि यावत्या नागस र्योदिसु ब्रुः
 य ॥ अधीभ्यनी समस्तानां नु कृत्वा लीपु कर्हि ना ॥ सदेव
 गत्या ० कस्यावगी त्रगद निवृगि ॥ ॐ गय नं कामदिमा वि

रुतं वासवर्षी गां ॥ यति गवा मवध्यं क वाठनीयान्वा न्यव
 रुकत्यस्व युदा गवा मानयो ॥ सुनवन्दिने ॥ एगस्य नीय निन
 कस्य ॥ सत्यं सत्यं वशामम ॥ ॐ मिष्टी महा कालसंहिता या गु ॥
 कात्या सत्सु नाम समाफ ॥ ॥ गु ॥ कालि कमस्तम ॥
 ॐ नमः ॥ श्री गु ॥ कालि ॥ श्री दशु वाय ॥ शिष्य वधु नय ॥ श्रु यं मय
 कृ यं वाय ॥ त्रया इ वी ससा वा ॥ न नापि रुच नायव ॥ १ ॥ गु
 काति गु ॥ कवयं नाम्नाय दि ॥ मंगल ॥ न स्मामूय दि ॥ गदानी

८

३३

नाथने लोक दुर्लभं ॥ २ ॥ विश्वमंगल मुर्त्यादि कवय नल विद्या मे
 दावत्य त्रया या कृत देव दिवमनेम ॥ ३ ॥ समुत्सुकं ग कुव ॥ न ॥ य
 इ ॥ नायि सत्वर ॥ पा ॥ न ॥ य ॥ म ॥ हा ॥ क ॥ ल ॥ न ॥ वा ॥ यि ॥ मु ॥ म ॥ ह ॥ सि ॥
 महा काल उवाच ॥ साधु वया ॥ संह दव ॥ सि ॥ साधु साधु पुनः पुनः ॥ य
 नानिद भग ॥ कवय विश्वमंगल ॥ ५ ॥ यद वाय मर्द यु ॥ त्वयि
 नय नसा ॥ विश्वमंगल मुर्त्यादि कवय नल विद्या मे ॥ ६ ॥ ग

उसदंरुः कर्कशः कमलाननं । एकगामनवः सर्व कवचं च
कनः ॥ १ ॥ तुलया विधुर्गं युर्वुः मिदं गगः स्य विदुर्ग । कवचा
तुह्यांसि मुक्तायाः सन्निपाद्वनि ॥ ७ ॥ नानिनेन सा तुल्य
सत्यं सत्यं ददास्यहं । यथ नीयं यत्नन । कवचीयं च विगुद
॥ नय नीयं सन्निपादि नदागव्यं कथं यन । नेकाः इति मंगाय
इयदि कवचानन ॥ १० ॥ नेन नदं या ॥ मिनि विधुवप्लान्
य

सनां जूतसु दाशमलं यय ॥ सिद्धि वांछया ॥ ११ ॥ स आ मुनि
धनं गोमि मुक्ता का लीयकायन ॥ सावधाना विदानी कवची
भवमर्त्त ॥ १२ ॥ ॐ अस्य गोविधमर्त्त लनाम्न महावदक कवच
सम्यक् सविनू यदुन्द न कवकादि गवका का मुक्ता
वगाहुं बीजं शुभं न किः ॥ किं कीलकं सर्व लीय सिद्धि पूर्व
॥ न जय विनिर्माण ॥ १३ ॥ ॐ यामुनि वः सिद्धि कवली कालि

म०। की०। त०। त०। म०। सिद्धि०। विकला०। ती०। सदा०। श्व०॥ १३॥
 खं०। य०। लु०। या०। म०। न्य०। वी०। न०। क०। तु०। भ०। सदा०। क०। मू०। क०। लु०। व०। द०। का०। या०। नि०। नी०।
 भ०। क०। लि०। का०। व०। तु॥ १४॥ ने०। का०। ह०। नू०। क०। ल०। स०। क०। य०। नी०। म०। या०। तु०। का०। लि०। नी०।
 की०। की०। क०। व०। व०। गु०। य०। तु०। का०। लि०। का०। भ०। सदा०। श्व०॥ १५॥ हा०। का०। न०। द०।
 सिद्धि०। त०। की०। न०। व०। व०। तु०। गु०। य०। ह०। म०। म०। क०। ना०। सा०। व०। लु०। का०। या०। नि०। नी०। म०।
 सदा०। श्व०॥ १६॥ आ०। ह०। नी०। उ०। ष्ठा०। थ०। नी०। या०। तु०। सदा०। स०। म०। य०। द०। दि०। का०।

क०। व०।

३०

गू०। लो०। द०। नां०। राज०। राज०। न्य०। वी०। भ०। न०। क०। ता०। सदा०॥ १७॥ इ०। स०। सदा०। म०। न०।
 नां०। या०। तु०। गी०। उ०। य०। ल०। न०। वी०। मू०। मू०। या०। तु०। न्य०। लु०। का०। ट०। न्य०। वी०। भ०। यि०। व०। क०। म०।
 ॥ १८॥ वू०। वू०। क०। ल०। भ०। न०। क०। तु०। सर्व०। दा०। तु०। म०। न०। न्य०। वी०। कू०। की०। भ०। न०। क०। तु०।
 म०। गी०। लू०। क०। भि०। न०। क०। तु०। सर्व०। दा०॥ १९॥ रु०। रु०। रु०। रु०। जी०। व०। द०। क०। लु०। न्य०। व०।
 तु०। सर्व०। दा०। मू०। मू०। वि०। क०। सु०। लं०। या०। तु०। उ०। य०। ज०। क०। न्य०। वी०। म०। म०। ॥ २०॥
 कू०। क०। लो०। ल०। क०। तु०। भ०। नि०। व०। द०। ती०। व०। सर्व०। दा०। कू०। की०। भ०। न०। क०। तु०। ००। य०। तु०।

धारयाविनी ॥ २१ ॥ मुं मुं गुं गुं श्रीनीनातिं ममनकुरु
 दा ॥ कुं कुं या ॥ मसिदायातु वा ॥ वीधायवृषिनी ॥ २२ ॥ मुं मुं
 नश्वरीयातु ममयुषं सर्वदा ॥ कुं कुं केटिं न कुरु म
 दवीलयानका ॥ २३ ॥ हे हे मं न क ग दू न सर्वदा व लु ख व न
 ॥ मुं मुं मं जान्नीयातु का वं गी ली ष नौ न ना ॥ २४ ॥ जीं थीं
 प्यायुगं यातु गामसी सर्वदामम ॥ कुं कुं या दो म हा विद्या सर्वः
 ३५

दासमन कुरु ॥ २५ ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः सर्वसंसारदुःखहर्त्र
 ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः कामाख्या सर्वदावतु ॥ २६ ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः
 यनीयातु ॥ २७ ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥
 कादसमवदा ॥ २८ ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥
 तु ॥ २९ ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥
 दामम ॥ ३० ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥

बुद्धं यत्मा नं। मनीष

कवयंयाकं नास्मादे वि श्वमंगलं सर्वस्यः कवयस्य सु (अष्टं सास
 नवयं ॥ ३० ॥ छंदं यति ता स च न हं रुस्मने वा इव गुण्यु य गलः
 स्तानेषु विनयस्य य दा इधः कवयं दृष्टं ॥ ३१ ॥ दग्धवालो नूनं जय
 यश कु गायिगच्छु समन नियगच्छु न (स्य स्वायद संकुल
 ॥ ३२ ॥ मन्मथन पुनरु गच्छु का नायद स्य संकुल वज्र दान
 सयि पुन सि (को वा गा भि वं वल ॥ ३३ ॥ निबोदा वा शनि सः

श्री १

५

दीप गच्छु व सय्ये व श्रित गच्छु लि नि नै कु गायि वरग ४ यृ पि दी मि
 मां ॥ ३४ ॥ नय या धि लयं ग स निव गच्छु वज्रं लयं सी नि श्व गु ह ज न
 स्य विषजं वल्यं नहि ॥ ३५ ॥ नाग्न्यु त्यागो नै वरुग थ गजः
 गच्छु थ वि दू द धी य ल लयं न क दायि य जाय न ॥ ३६ ॥ न ड वि
 लयं वा स्य नव मा मी लयं ग थ कृ त्या इ लि वा वज्रं दी पा स्य गच्छु
 क दायि न ॥ ३७ ॥ सह मी जय न श्व स्य पुन श्व न न म द्या गच्छु

लाभयुं जीम सर्वस्मिन्नपि कर्मणि ॥ ३७ ॥ वस्य कार्या माह नय
मान ॥ ३८ ॥ द्वाटमगथा ॥ सुकनवगथद्वय गथाकृत्या इति व
यय ॥ ३९ ॥ इन्द्रं गगनधरं यत्र यत्र कुनिवा ॥ ४० ॥ हृतावे
नासयति विवादजयति द्विषः ॥ संकटं न वति देयुं कलह
जयमाप्नुया ॥ ४१ ॥ यदीकृतमहनीलक्रीं सुनयायाय

यवय ॥ विद्यां कां विनये नये यम आवाग्यमवय ॥ ४२ ॥ लाम
नसीखं विष्टिहानि मनालस्य महादय ॥ अधादि कद्वं जितुं
नामूं वययिय ॥ ४३ ॥ कववनामना सर्वं स साधयति साधक
यदद्यायति विरुन सिद्धि नुरु नुवमि ॥ ४४ ॥ इयं दं प
हान कववविश्वमंगलं ॥ विश्वस्य मंगलं यस्मा रुमावे विश्व
॥ ४५ ॥ सानि ध काले कं गु क काल्या कन न्यकारितं सिद्धि

यत्कुरुहमिष्टं लुपयिहलमभुन ॥ ५० ॥ यदिहसिस्वन्मनि
 सर्वं गुणं यमंगलं य० वं भुन्या० यत्तु कववं दिव्यमंगलं ॥ ५१ ॥
 संयाप्यामियरांसिद्धिं गुह्यायां लकिभवय। तिसं धाय० नाद
 वि। सर्वं पाथः पुमभुन ॥ ५२ ॥ यत्तु कस्मिदिदया न नदद्याद्वि
 जीवियः। दद्यामलै। माध्यामि। ससु नशानिवा न्यव ॥ ५३ ॥
 ध्यायत किं काय साधकायदि नायव विविधयुर्विद्यदा न वाना

८

यु१

३०

खं२

लकायकदारन ॥ ५० ॥ वदामायसि नादवाः सर्वान्मगुपुनिस्त्रि
 ॥ ५१ ॥ अ० ॥ सर्वमिर्नम्ययां संसर्गं सुव न्यवी ॥ ५२ ॥ यस्मिन् कसि न
 यिमुना मयद ॥ यदि प्रिय। नदेवाग्राधिकान ॥ ५३ ॥ कववं
 दिव्यमंगलं ॥ ५४ ॥ गुह्यकायांसदातकि ॥ ५५ ॥ दवि
 ॥ ५६ ॥ दं वकववं दि त्वया साकथितामया ॥ ५७ ॥ अत्यसुतु
 यीमेगां वतुर्वन्मदि जागय ॥ ५८ ॥ अग नद्य दया द

भाद्रमाशुया ७॥ १४॥ ॐ गि श्री महा काल सौ दिव्यायां वि श्व मं
 लक्ष्म्यं नाम स मयट सं समाक ॥ १॥ नमः ४ श्री गु क
 ॥ ॐ शु नमः सुगुण तत्सुगुण महा माय श्वे त्रयिनी । या सा न क का
 कृद का इ सि गा ग उ त्रयिनि ॥ १ ॥ रु का न नि ल या द वि
 रु का या वा य त्रयिनी ॥ रु का न द ल ना स सु ग म रु का न मा न
 व ॥ २ ॥ सु रु द ह नि ग ल भ य वा य न य वा मि य । उ का

कि नी वि श्व मा न न मा नि र्वा न दा यिनी ॥ ३ ॥ अ द ह द द त्र यि
 ॥ गु न गु य वि का मि नि । मं ग लार्थे न म म्मु न मा मं ग ल दा यि
 नी ॥ ४ ॥ महा कृ लु लि नी । ति न्ने या न्मा य न स त्र यि नि । य द्रु त
 दि नी या य म न्ने लार्थे न मा न म ॥ ५ ॥ व द्दि म गु ल स सु
 सूर्या म गु ल ल दि नी । मा म स लु ल स सु न न मा मं ग ल
 ले ॥ ६ ॥ उ का कि नी वि श्व मा न कालि म गु ल स सु नि ॥ का

यं वक्रं नित्यं विचलन् नमो भूय ॥ १ ॥ ऊँ कालिका
 नित्यं दूका वयविनादिना ॥ रुं कौ वनादमं हन नमस्तु क
 लनामिने ॥ ६ ॥ जयमंगलमागम जय कालान् काले क
 जयलक्ष्मी जथाङ्ग जयकालीनमासुग ॥ ७ ॥ ऊँ मे वक्र
 मस्तु नमस्तु वदु कायव ॥ कृयालनमस्तु कालसिनेन
 मासुग ॥ १० ॥ वक्रकालि नमस्तु ॥ ११ ॥ कालीनमासुग

उ

५१

महाकालीनमस्तु मृत् कालीनमस्तु ॥ ११ ॥ लडकालीनम
 नित्यं यनाकालीनमासुग ॥ मारुतु कालिकदवि उडकालिन
 मासुग ॥ १२ ॥ हंसकालिनमस्तु कालकालिनमासुग ॥ १३
 कामकालीसूर्यकाली नमस्तु जयकालिक ॥ सृष्टिकालिनमस्तु
 स्थितिकालीनमासुग ॥ १४ ॥ संहारकालिकदवि नमस्तु व
 नृपिनि ॥ नृनाखाथे नमस्तु ॥ जनाकालिनमासुग ॥ १५ ॥

म३

गुह्यकालिनमस्तु नमस्तु विश्वमागव ॥ अग्निमज्जमस्तु
 सिद्धिदायिनमास्तु ॥ १३ ॥ नववक्रामस्तु कालिनीलङ्गीसूक्तमस्तु
 ला अस्तु कालिनीलङ्गीसूक्तमस्तु ॥ १४ ॥ सप्तमस्तु
 मग्निमस्तु नानामस्तु ॥ १५ ॥ सिद्धिदायिनमास्तु
 कर्मकन्दननिर्गम ॥ १६ ॥ हयननमुख्य ॥ कालिनीसूक्तमस्तु ॥ १७ ॥
 मकायमालिनीसूक्तमस्तु ॥ १८ ॥ निर्वो

४३

पञ्च

निर्वो ॥ लङ्गीसूक्तमस्तु ॥ १९ ॥ कालिनीसूक्तमस्तु ॥ २० ॥
 मकायमालिनीसूक्तमस्तु ॥ २१ ॥ ॥ हाकालिनीसूक्तमस्तु ॥ २२ ॥
 ठिका ॥ नकायनीलिनीयाका ॥ २३ ॥ मकायमालिनीसूक्तमस्तु ॥ २४ ॥
 युक्तालीव ॥ २५ ॥ मकायमालिनीसूक्तमस्तु ॥ २६ ॥
 लुमागुका ॥ २७ ॥ मकायमालिनीसूक्तमस्तु ॥ २८ ॥
 त्रिकायसिद्धिदायिनी ॥ २९ ॥ कालिनीसूक्तमस्तु ॥ ३० ॥

गलनाथेन दोष्टं न वरु (रु) न सम विभ । वा द्मी मा ह्मन्नी
 दीर्घे वृदीदि र्च नाजिका ॥ २३ ॥ वदिली वृद्धि का सः
 लक्ष्मी (यं व व क श व स्ति) । रु क यं था उ ग त्सर्वं म रु फा का
 मरु पिती ॥ २४ ॥ या सा न क का वि ली काली काल सं क र्ष ली
 नमः प न वृ द्धु र्ध्वं या सा प न ग त्वा न्त्रा धिनी ॥ २५ ॥
 उ ग म्ना स न गा या सा काल सं क र्ष ली नमः श र्पि म स्ता द्ध न
 न

[illegible]

दमालिकां गिरीशु द्रुका ल्यामहा माया सुवंसु मा
रेशी काम कलाये नमः ॥ उद्युतानां निष्यु वकदहं लिखितं
येनां पुत्रु गभां कवकां । कनात दक्षो विकेनात वृषां लीक
लिकां काम कलां नमामि ॥ १ ॥ नवा सव्यसनी वि
विगां नवा सिद्धां नवपानि कार्त्तिं कर्त्तुः समावद्व नृमं
दहानां श्री कालिकां काम कलां नमामि ॥ २ ॥ गवां नृ
प

४४

ली मंति गयीन दुंग सुनावन मां नृकया तर्हषि नां ए समदम जां
गुलिः महमानी श्री कालिकां काम कलां नमामि ॥ ३ ॥ कंदर्प
वीजात्मक काम वृषां काम श्वरीं काम वगीं कलीनां । सकृद्भूत
गुणानि वद्विगां गीं श्री कालिकां काम कलां नमामि ॥ ४ ॥ क
लुक्त्रिगाम विसा न कानि लीं नि ह्यं नवा ग क य

नदत्तुजिवाह्यांवन्तु ॥ अहिंगांगां श्रीकालिकां कामकलां
मामि ॥ १ ॥ अर्जिणिभूतं वनवकुमं कुमं नवं नालं वन
अहिकुणी ॥ दक्षसमाकुं विगजं खमाला श्रीकालिकां का
मकलां नमामि ॥ ३ ॥ पार्श्वसुखायै वनं वनागं नदत्तु
सिवायाटसुखयै वनं तत्रिपुलां मुक्तं वनामललां श्रीकालि
रु

४५

कां कामकलां नमामि ॥ १ ॥ दिगं वनीमककलां यकणी अह
टहासेरतिनीमवृषां कार्मकुलां गां मधूयानमलां श्रीकालि
कां कामकलां नमामि ॥ २ ॥ सदापि यक्षकयकाविनीयन
निर्गुलवंगसुवमं उमदिनीं कलत्तुविगतम्भविस्तु

गां गीं श्रीकालिकां कामकलां नमामि ॥ ८ ॥ प्रवर्तमान
 गयनाद्ध सन्निष्टां कालानला दामल सत्कलवरां । गतिद्वय
 सन्निष्टहर्त्रिणी कां श्रीकालिकां कामकलां नमामि ॥ १०
 यः ह म द म ल ऊ का ध के नां न वृ थां पु न व पि वि प यी
 नः यं व व लुः स मं गा न् । ज य मि द ह न जा या सं पु रं मं गुः
 व

श्री म मरु कथि

1886

I

४६